

दालचीनी की कृषि तकनीक



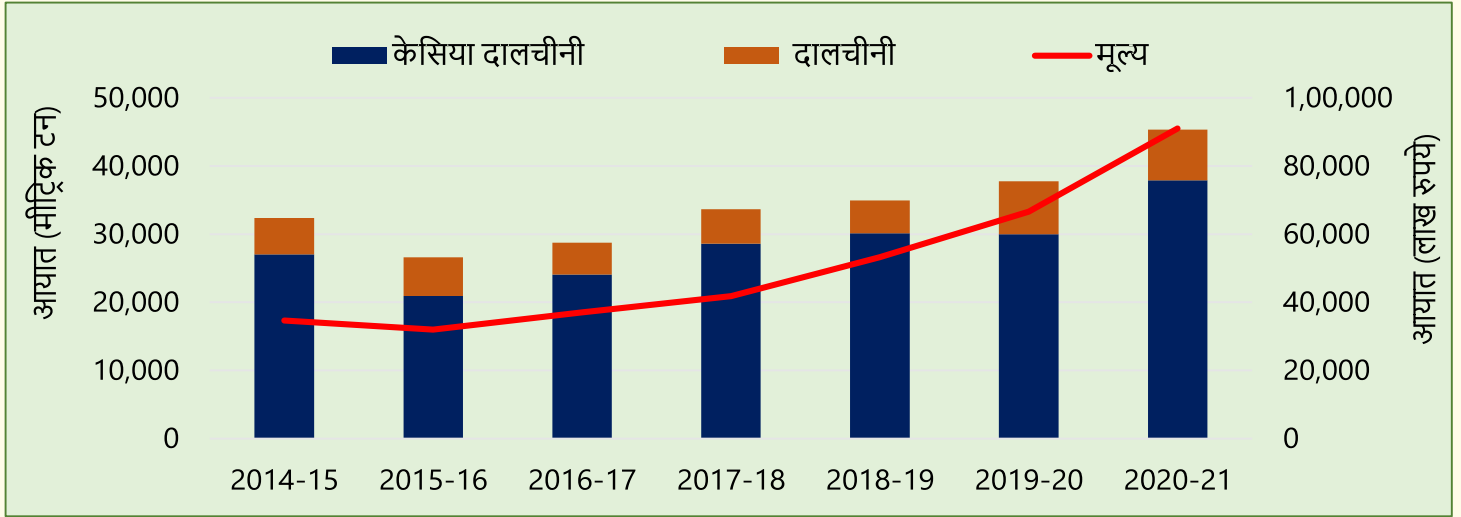
सीएसआईआर – हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान
पालमपुर – हिमाचल प्रदेश
CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology
Palampur - Himachal Pradesh



दालचीनी दुनिया में सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले मसालों में से एक है। दालचीनी, लौरेसी कुल से संबंधित एक सदाबहार झाड़ीदार पेड़ है जिसकी छाल और पत्तियों में मीठी सुगंध होती है। दालचीनी का सबसे उपयोगी हिस्सा छाल है, जिसे आम तौर पर मसाले के रूप में और कई प्राकृतिक औषधीय अनुप्रयोगों के लिए उपयोग किया जाता है। पारंपरिक रूप से ज्ञात दालचीनी, *सिनामोम वेरम* (सीलोन दालचीनी, असली दालचीनी) नामक झाड़ीदार पेड़ की शाखाओं की सूखी आंतरिक छाल है। दालचीनी की खेती ज्यादातर श्रीलंका में की जाती है, जबकि सेशेल्स, मेडागास्कर और भारत इसके छोटे उत्पादक देश हैं। भारत में यह केरल, महाराष्ट्र व तमिलनाडु के कुछ सीमित क्षेत्रों में उगाया जाता है। दालचीनी के पौधे का आर्थिक जीवन काल लगभग 30-40 वर्ष तक होता है।



भारत प्रतिवर्ष 45,318 टन (909 करोड़ रुपये) दालचीनी का आयात चीन, श्रीलंका, वियतनाम, इंडोनेशिया और नेपाल से करता है। यह आश्चर्यजनक है कि 45,318 टन आयात में से भारत, चीन और वियतनाम से 37,166 टन *सिनामोम केसिया* (हानिकारक दालचीनी) का आयात करता है। *सिनामोम केसिया*, दालचीनी की अन्य प्रजाति है जिसकी छाल को दालचीनी में मिलावट के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

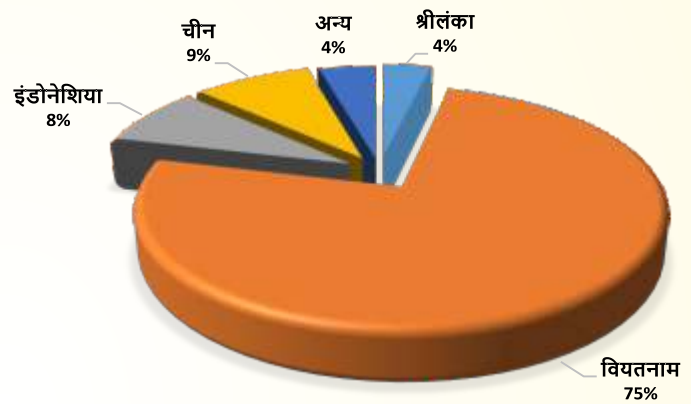


नई पहल

सी० एस० आई० आर० - हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर द्वारा भौतिक व पर्यावरणीय परिस्थितियों के आधार पर मॉडल का अध्ययन कर यह पाया कि हिमाचल प्रदेश के निचले क्षेत्रों विशेषकर पौंग डैम, गोबिंद सागर झील तथा रेणुका झील के आसपास के हिस्सों की जलवायु दालचीनी की खेती के लिए उपयुक्त है। इसके अंतर्गत संस्थान द्वारा बीते वर्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कोझीकोड, केरल तथा डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, महाराष्ट्र के साथ मिलकर ज़िला कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, ऊना तथा सिरमौर के विभिन्न इलाकों में दालचीनी के प्रायोगिक प्रक्षेत्र लगाए गए जिसके आशातीत परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

वानस्पतिक वर्गीकरण और पौधे का विवरण

सिनामोम वेरम एक सदाबहार झाड़ीदार पेड़ है जिसकी ऊंचाई 10 मीटर तक होती है। इसकी बाहरी छाल खुरदरी और भूरे रंग की तथा भीतरी छाल चिकनी व पीले रंग युक्त होती है। इसकी पत्तियां 10-16 सेमी लंबी, चर्मिल व नुकीले सिरे वाली होती है। पत्तियाँ ऊपर से गहरे हरे रंग की और नीचे की ओर हल्के हरे रंग की होती हैं। फल (बेरी) 1-1.5 सेंटीमीटर लंबाई के छोटे और पुष्ट/गुदेदार होते हैं और इनमें एक ही बीज होता है। दालचीनी का मसाला रूप पेड़ की बाहरी छाल को हटाकर और भीतरी छाल को खुरच कर प्राप्त किया जाता है, जिसे सुखाकर पाउडर बनाया जाता है।



भारत के आयात में प्रमुख देशों का हिस्सा (मात्रा)



दालचीनी की नर्सरी



किस्म : निथ्याश्री



किस्म : कोंकण तेज

मिट्टी और जलवायु

दालचीनी एक कठोर पौधा है, जो लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में अच्छी तरह से विकसित हो सकता है। दालचीनी की वृद्धि के लिए अच्छी जल निकास वाली जैविक खाद से भरपूर बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त रहती है। दालचीनी के लिए समुद्र तल से 1000 मीटर तक की ऊंचाई तथा लगभग 2000-2500 मिमी की अच्छी तरह से वितरित वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त होते हैं। इसके उचित विकास के लिए लगभग 20-27 डिग्री सेल्सियस के औसत तापमान के साथ गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। प्रथम वर्ष के दौरान छोटे पौधों को ठंड तथा कम तापमान की परिस्थिति में पुआल अथवा इसी तरह की सामग्री के साथ ढक कर रक्षा करना आवश्यक है। पाले के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए सिंचाई भी उपयोगी हो सकती है।

प्रवर्धन और रोपण

दालचीनी को बीज, कलमों और गूटी (air layering) द्वारा प्रवर्धित किया जा सकता है। आठ से दस महीने की पौध /जड़ वाली कलमों को भूमि में लगाया जाता है। पौधरोपण के लिए 0.5 × 0.5 × 0.5 मीटर के गड्ढे 3 × 3 मीटर के फासले पर खोदे जाते हैं, जिसमें जैविक खाद और ऊपरी मिट्टी भरी जाती है। पौधों को लगाते समय नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटैश की 20:18:25 ग्राम खाद प्रति पौधे की दर से प्रयोग में लाई जा सकती है। बेहतर परिणाम के लिए पौधों को मानसून प्रारंभ होने के दौरान जून-जुलाई में प्रत्यारोपित करना चाहिए। शुरुआती वर्षों में आंशिक छाया दालचीनी के पौधों के स्वस्थ और तेजी से विकास के लिए फायदेमंद होती है। रोपाई के बाद नई पौध की सिंचाई तब तक करें जब तक की वे मिट्टी में अच्छी तरह से स्थापित न हो जाएं।

फसल प्रबन्ध

नए रोपे गए पौधे को नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए। नियमित अंतराल पर हाथों से निराई-गुड़ाई, विशेष रूप से प्रारंभिक अवस्था में, बेहतर वृद्धि में सहायक होती है। कांट-छांट की गई शाखाओं के साथ मल्टिंग और रूटस्टॉक्स के आस-पास से निकाली गई खरपतवार नई वृद्धि में सहायक होती है। व्यवस्थित खेती के तरीकों में, दालचीनी को झाड़ी के रूप में रखा जाता है जिसमें चार - पांच अंकुर 2.0 मीटर तक बढ़ते हैं। मिट्टी की उर्वरता और वर्षा के आधार पर, पौधे तीन-चार वर्षों में 2.0 मीटर तक की ऊंचाई प्राप्त कर लेते हैं। पानी के ठहराव की समस्या से बचने के लिए उचित जल निकासी आवश्यक है।



बिलासपुर



हमीरपुर



कांगड़ा



ऊना



सिरमौर



सिरमौर

हिमाचल प्रदेश में दालचीनी के विभिन्न प्रायोगिक प्रक्षेत्र पर प्रथम वर्षीय विकास



दालचीनी जर्मप्लाज्म में विविधताएं

कॉपसिंग

रोपण के दो वर्ष बाद, मुख्य तने को जमीन से 10-15 सेंटीमीटर की ऊंचाई पर काट देना चाहिए ताकि नए अंकुरण का उत्पादन किया जा सके, इस प्रक्रिया को 'कॉपसिंग' कहते हैं। केवल चार से पाँच मुख्य टहनियों को बरकरार रखा जाता है, जबकि अन्य को हटा दिया जाता है। यह तब तक किया जाता है जब तक पूरा पेड़ एक छोटी झाड़ी का आकार नहीं ले लेता। दो-तीन वर्ष बाद, यह टहनियाँ फसल काटने के लिए तैयार हो जाती हैं।



पालमपुर में दालचीनी जर्मप्लाज्म प्रक्षेत्र

कटाई और उपज

कॉपसिंग के दो-तीन वर्ष के बाद शाखाएँ कटाई के लिए तैयार हो जाती हैं। छाल की कटाई बरसात के मौसम में करनी चाहिए। इसके लिए तीन-चार वर्ष पुराने पेड़ से 2.0 सेंटीमीटर से ज्यादा मोटी और करीब 1.5 मीटर लंबी शाखाओं को काटा जाता है। शाखाओं की कटाई प्रातः काल में करनी चाहिए। पत्तियों को तने से अलग करने के बाद खुरदरी बाहरी पतली परत को घुमावदार चाकू से खुरच कर हटा दिया जाता है। इसके बाद धारदार चाकू की सहायता से छाल को छील लिया जाता है। छिली हुई छाल को एक दिन के लिए छाया में सुखाने के लिए रखा जाता है, उसके बाद तीन-पाँच दिनों के लिए धूप में सुखाया जाता है। सुखाने की प्रक्रिया छाल को सिकोड़ती है और क्लिल का आकार देती है। छोटे क्लिल को बड़े क्लिल के अंदर रखा जाता है। दालचीनी की उपज क्षमता प्रारंभिक वर्षों में 54 किलोग्राम सूखी क्लिल/हेक्टेयर और 10वें वर्ष के बाद 250 किलोग्राम सूखी क्लिल/हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त एक टन पत्तों से प्रति वर्ष 1-1.25 किलो तेल भी प्राप्त किया जा सकता है। एक हेक्टेयर दालचीनी की खेती से चार-पाँच वर्ष उपरांत लगभग 1.25 लाख तथा 10 वर्ष उपरांत 3.00 लाख तक की कुल आय प्राप्त की जा सकती है।

संकलन	संपर्क
रमेश चौहान सतबीर सिंह सनतसुजात सिंह अशोक कुमार अमित कुमार	डॉ. संजय कुमार, निदेशक सी.एस.आई.आर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर-176061 हिमाचल प्रदेश, भारत फोन: 01894-230411 फैक्स: 01894-230433 ईमेल: director@ihbt.res.in वेबसाइट: www.ihbt.res.in

जनवरी, 2023